ऑमण्ड का संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक विश्लेषण :

संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक उपागम द्वारा व्यवस्थाओं के विश्लेषण का सर्वाधिक प्रयास ग्रेबियल ऑमण्ड ने किया। ऑमण्ड ने ईस्टन के आगत-निर्गत विश्लेषण को अधूरा मानते हुए 1960 में 'The Politics of Developing Areas' के अंतर्गत यह तर्क दिया कि ये आगत-निर्गत तत्त्व वस्तुतः राजनीतिक प्रणाली के कृत्य हैं।

ऑमण्ड के अनुसार राजनीतिक व्यवस्था की चार विशेषताएँ हैं, जिन्हें 'अन्तः क्रिया के औपचारिकपूर्ण प्रतिमान' कहा जाता है वे निम्नलिखित हैं —

i) प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था की कुछ संरचनाएँ होती हैं, इनमें से कुछ अधिक विशेषीकृत होने के कारण अधिक कार्य कर सकती हैं, और अन्य कम विशेषीकृत होने के कारण इसमें कम कार्य कर सकती हैं।

ii) व्यवस्था और इसकी संरचनाओं में कुछ भी अंतर हो सकता है, लेकिन सभी राजनीतिक व्यवस्थाओं में समान राजनीतिक कार्य किये जाते हैं।

iii) राजनीतिक संरचनाएँ कई ऐसे कार्य करती हैं, जिन्हें बहुकार्यक कहा जा सकता है।

iv) पूर्ण समाज का अंग होने के कारण सभी राजनीतिक व्यवस्थाओं की अपनी संस्कृति होती है, जो कि हमेशा परम्परागत और आधुनिक का मिश्रण होती है।

ऑमण्ड का मानना है कि पर्यावरण के कारक संरचनाओं तथा उप-व्यवस्था और उसकी भूमिका को बहुत अधिक प्रभावित करते हैं। ऑमण्ड ने चार प्रकार के आगत-कृत्यों (Input Functions) और तीन प्रकार के निर्गत कृत्यों (Output Functions) तथा इससे जुड़ी हुई संरचनाओं का पता लगाया। उसके अनुसार

आगत - कुल और - सरकारी उपप्रणाली द्वारा संपन्न किये जाते हैं जैसे - समाज और सामान्य पर्यावरण) जबकि निर्गत कुल सरकार के अंगों द्वारा संपन्न किये जाते हैं। जैसे विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका।

~~आमण्ड का विचार है कि प्रत्येक व्यवस्था दो प्रकार के कार्यों का निष्पादन करती है - आगत से संबंधी और निर्गत सम्बंधी प्रकार्य।~~

~~राजनीतिक व्यवस्था~~ राजनीतिक प्रणाली के इस प्रतिरूप का विस्तृत निरूपण ग्रेबिएल आमण्ड और जी. बी. पॉवल की चर्चित कृति "Comparative Politics - A Developmental Approach" (1966) के अंतर्गत किया गया है। इस प्रतिरूप को रेखा-चित्र के रूप में इस प्रकार व्यक्त कर सकते हैं -

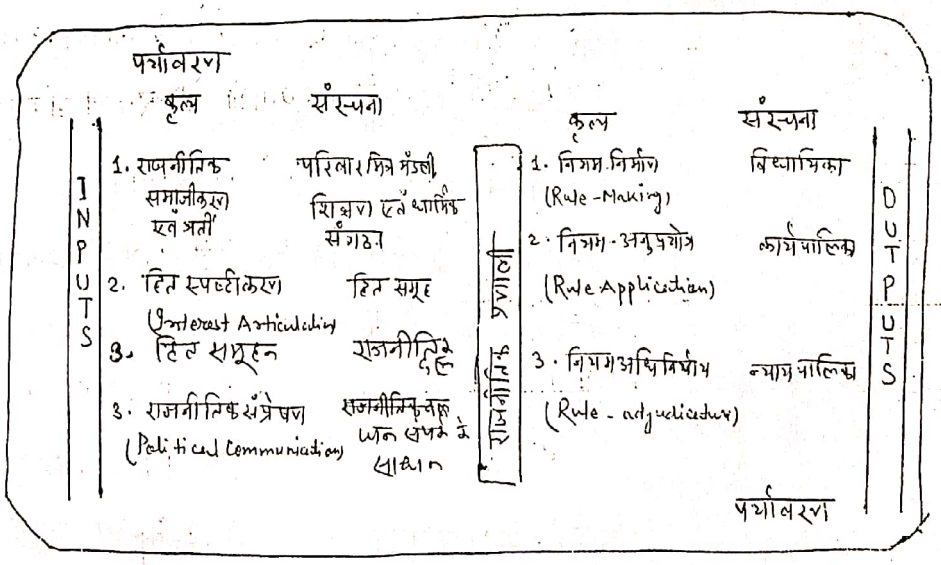

निवेशन या आगत ~~कृत्यों का~~ धारणा को विकसित करके आमण्ड ने यह सिद्ध कर दिया है कि राजनीतिक व्यवस्था एक बन्द व्यवस्था नहीं है, क्योंकि यह पर्यावरण तथा अंतर्राष्ट्रीय सम्बंधों से निरंतर प्रभावित होती है।

आगत सम्बंधी कृत्य विशेष रूप से राजनीतिक समाजीकरण, तथा राजनीतिक संचार का उद्देश्य

राजनीतिक मूल्यों का विकास करना है। जिन यंत्रों से अथवा तरीकों से राजनीतिक व्यवस्था आगत-कृत्यों को निर्गत कृत्यों में परिवर्तित करती है, उसे आमण्ड परिवर्तन-प्रक्रिया (Conversion-Mechanism) कहता है। आमण्ड के अनुसार वह राजनीतिक व्यवस्था अधिक स्थायी होती है होगी जिसमें आगत कृत्यों को इस ढंग से परिवर्तित कर दिया जाता है कि वे स्वयं राजनीतिक व्यवस्था पर कोई दबाव नहीं डालते अर्थात आगत एवं निर्गत कृत्यों में सामंजस्य, व्यवस्था को अधिक स्थायित्व प्रदान करता है।

V.V.V. ***

राजनीतिक प्रणाली के इस प्रतिरूप के अनुसार निम्नलिखित आगत-कृत्य (Input Functions) हैं :—

(i) राजनीतिक समाजीकरण एवं भर्ती : इस राजनीतिक समाजीकरण वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा राजनीतिक संस्कृति के मूल्य, विश्वास एवं संवेग (emotions) वर्तमान एवं आगामी पीढ़ियों को प्रदान किये जाते हैं। इस कृत्य को संपन्न करने वाली संरचनाएँ हैं — परिवार, मित्रमंडली, शिक्षण संस्थाएँ और बड़े-बड़े समूह। बड़े-बड़े समूहों में राजनीतिक दल, दबाव समूह भी आते हैं। जन-संपर्क के साधन भी कुछ हद तक इस प्रक्रिया में अपना योग देते हैं।

भर्ती वह प्रक्रिया है, जिसके अंतर्गत राजनीतिक समूह अपने लिए नये सदस्य बनाते हैं, या पुराने सदस्यों की जगह नये सदस्य नियुक्त करते हैं। उदाहरण के लिए, नये मतदाताओं का समर्थन प्राप्त करना, राजनीतिक दलों तथा अधिकारीतंत्र के रिक्त पदों के लिए चुनाव और नियुक्तियाँ इत्यादि इसी प्रक्रिया के अंग हैं।

(ii) हित-स्पष्टीकरण (Interest Articulation) : इस प्रक्रिया के अंतर्गत लोगों के विचारों, मान्यताओं और अधिमान्यताओं को राजनीतिक प्रणाली के प्रति निश्चित

मांगों के रूप में परिणत कर लिया जाता है। इस कृत्य को निभाने वाली प्रमुख संस्थाएं, हित-समूह हैं। हालांकि राजनीतिक दलों के कार्यक्रम, चुनाव अभियान और जनसंपर्क के साधन भी इसमें अपनी-अपनी भूमिका निभाते हैं।

(iii) हित समूहन (Interest Aggregation) : इस प्रक्रिया के अंतर्गत विभिन्न समूहों की मांगें एकत्र कर ली जाती हैं, ताकि वे राजनीतिक सत्ताधारियों का ध्यान आकर्षित करने के लिए अधिक प्रभावशाली सिद्ध हों। इस स्तर पर लोगों की मांगें ऐसे मुद्दों का रूप धारण कर लेती हैं, जिन पर राजनीतिक विचारण और कार्यवाई जरूरी हो जाती है। (Political Consideration & Action)

हित समूहन का प्रमुख माध्यम राजनीतिक दल हैं।

(iv) राजनीतिक संप्रेषण (Political Communication) : इस प्रक्रिया के अंतर्गत विभिन्न समूहों की मांगें, समर्थन और विशेष प्रदर्शन राजनीतिक प्रणाली तक पहुँचाए जाते हैं, और सरकार के द्वारा आवश्यक सूचनाएँ, विवरण और निर्णय जन साधारण तक पहुँचाए जाते हैं। इसके लिए उपयुक्त संज्ञाएँ जन संपर्क के साधन हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि राजनीतिक संप्रेषण आगत और निर्गत कृत्यों के बीच संपर्क सेतु का निर्माण करता है।

राजनीतिक प्रणाली के तीन निर्गत कृत्य (Output Functions) हैं —

(i) नियम-निर्माण (Rule-Making)

(ii) नियम-अनुप्रयोग (Rule-application), और

(iii) नियम-अधिनिर्णयन (Rule-Adjudication)। ये

ये सरकार के परंपरागत कृत्य हैं, जिन्हें शासन की

Scanned with CamScanner

परंपरागत कृत्य संरचनाएँ हैं — अर्थात् क्रमशः विधायिका (Legislature) कार्यपालिका (Executive) और न्यायपालिका (Judiciary) संपन्न करती है। इस तरह राजनीतिक प्रणाली के आगत कृत्य तो गैर - सरकारी उपप्रणालियों (Non- Governmental Subsystems) की देन होते हैं, जबकि निर्गत कृत्य सरकारी उपप्रणालियों (Governmental Systems) के द्वारा संपन्न किये जाते हैं। आलमण्ड की मुख्य दिलचस्पी आगत कृत्यों के विस्तृत विश्लेषण में थी, क्योंकि इनका सरोकार राजनीति की अनौपचारिक संरचनाओं (Informal Structures) से है, जिनकी ओर तुलनात्मक राजनीति के परंपरागत अध्ययन में कोई ध्यान नहीं दिया गया था। इनका विश्लेषण ही आधुनिक उपागम को सार्थक करता है।

राजनीति का संरचनात्मक - प्रकार्यात्मक विश्लेषण यह मानकर चलता है कि राजनीतिक प्रणाली के उपर्युक्त कृत्य सर्वथा आवश्यक हैं। अतः इन कृत्यों को संपन्न किये बिना कोई राजनीतिक प्रणाली टिकी नहीं रह सकती।

संक्षेप में, आमण्ड के सम्पूर्ण विश्लेषण का निष्कर्ष यह है कि जो राजनीतिक व्यवस्था जितनी विकसित होगी उसकी संरचनाएँ (Structures) भी उतनी ही विशेषीकृत होंगी। आमण्ड आधुनिक राजनीतिक व्यवस्था को कहता है जिसकी राजनीतिक संस्कृति विशेषीकृत होती है। इस प्रकार वह संस्कृति विशेषीकरण के आधार पर राजनीतिक व्यवस्थाओं का विभाजन करता है।

संरचनात्मक - प्रकार्यात्मक उपागम की आलोचना :

इस उपागम की यह आलोचना की गई है कि यह बहुत ही रूढ़िवादी है। यह तर्क दिया जाता है कि विशेषकर विकासशील देशों के संदर्भ में यह उपागम राजनीतिक जीवन में संघर्ष एवं परिवर्तन के तत्त्व की उपेक्षा करता है।

इन देशों में जहाँ की ज्यादा गरीबी रही है, स्वाभाविक रूप से लोगों की ज्यादा रुचि स्थायित्व की अपेक्षा परिवर्तन की प्रक्रिया में होती है। इसको कार्यात्मकवादी ढाँचे में आसानी से समायोजित नहीं किया जा सकता। संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक विश्लेषण मूलतः राजनीतिक व्यवस्था-को ही इकाई मानता है, इसके अंतर्गत सामाजिक व्यवस्था को ध्यान में नहीं रखा गया है। आलोचकों के मतानुसार संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक विश्लेषण यथास्थिति (status quo) का समर्थक है। कई समीक्षकों ने तो इसे अमरीकी पूँजीवादी व्यवस्था को बनाए रखना का एक निश्चित प्रयास माना है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि अनेक त्रुटियों एवं कमजोरियों के बावजूद इस उपागम का सबसे बड़ा योगदान यह है कि इसने तुलनात्मक राजनीति के विश्लेषण को वैज्ञानिक एवं यथार्थवादी स्वरूप देने के उद्देश्यों से नए प्रत्ययात्मक उपकरणों की खोज की है। इसने तुलनात्मक राजनीति के क्षेत्र में ऐसे राजनीतिक तथ्यों एवं वास्तविकताओं की खोज की है, जो इसके पूर्व अंधेरे के गर्त में थी। यह कहना सर्वथा उपयुक्त होगा कि संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक विश्लेषण एक ऐसा सैद्धान्तिक विचारबंध प्रस्तुत करता है, जो विश्लेषणात्मक दृष्टि से संगत है, और आनुभविक रूप से लाभप्रद प्रयोग की क्षमताएँ रखता है।

संरचना वस्तुतः कुछ निश्चित कार्य हेतु ही अस्तित्व में आती है। प्रकार्य इस बात के विश्लेषण का है कि कौन सी संरचना किस बुनियादी कार्य की पूर्ति करती है और किस परिस्थिति में।

संरचनात्मक - प्रकार्यात्मक उपागम की आलोचना

(i) यह उपागम राजनीतिक व्यवस्था को ही इकाई मानकर चलता है इसके अंतर्गत सामाजिक व्यवस्था को ध्यान में नहीं रखा गया है। यह समाज के परिप्रेक्ष्य में राजनीतिक व्यवस्था की संरचनाओं एवं प्रकार्यों की व्याख्या नहीं करता।

(ii) संरचनात्मक - प्रकार्यात्मक उपागम राजनीतिक संरचना तथा राजनीतिक कार्यों का पृथक्करण करता है, जबकि वास्तव में संरचना और प्रकार्यों में बिल्कुल पृथक करना संभव नहीं है।

(iii) आलोचकों के अनुसार संरचनात्मक - प्रकार्यात्मक उपागम यथा-स्थिति (Statusquo) बनाए रखने का समर्थक है। कई आलोचकों ने तो यहाँ तक कह दिया कि यह उपागम अमरीकी पूँजीवादी व्यवस्था को बनाये रखने का एक निश्चित प्रयास है।

(iv) संरचनात्मक - प्रकार्यात्मक उपागम राजनीतिक सिद्धान्त के निर्माण, विकास के लिए एक सुदृढ़

... structural-functional

... जुड़ा हुए संरचनाओं का पता लगाया। उसके अनुसार

का दावा करता है, परंतु वास्तव में यह पाश्चात्य लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में लोकतंत्रीकरण मात्र की व्याख्या है।

(v) यह उपागम साम्यवादी देशों की राजनीतिक विकास की व्याख्या प्रस्तुत करने में असमर्थ है।

(vi) संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक उपागम रूढ़िवादी है। यह सामाजिक परिवर्तन के विरुद्ध पूर्वाग्रही है। इसका मुख्य उद्देश्य राजनीतिक व्यवस्था का अनुरक्षण है।

(vii) यह उपागम व्यवस्था के अनुरक्षण के सम्बंध में कोई वस्तुनिष्ठ मानदण्ड अथवा कसौटी प्रस्तुत करने में असमर्थ रहा है।

(viii) संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक विश्लेषण अत्यधिक जटिल और क्लिष्ट है, जिसके फलस्वरूप अध्ययन एवं विश्लेषण में अत्यधिक कठिनाई उत्पन्न होने की संभावना है।

निष्कर्ष :

संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक उपागम के अनेक गुण भी हैं और त्रुटियाँ भी। जब हम इसके गुणों एवं सीमाओं का विश्लेषण करते हैं, तो हम यह पाते हैं कि यह

संरचना वस्तुतः कुछ निश्चित कार्य हेतु की जाती है..... । प्रकार्य इस बात के विश्लेषण का है कि कौन सी संरचना किस बुनियादी कार्य की पूर्ति करती है और किस परिस्थिति में।

Scanned with CamScanner

उपागम एक सुव्यवस्थित सिद्धान्त निरूपण की दिशा में असमर्थ रहा है, किंतु इसके बावजूद यह उपागम कई दृष्टियों से उपयोगी है।

इस सिद्धान्त का सबसे बड़ा योगदान यह है कि इसने राजनीतिक विश्लेषण को वैज्ञानिक एवं यथार्थवादी रूप देने के लिए नये प्रकार्यात्मक उपकरणों की खोज की है। इसने राजनीति के क्षेत्र में ऐसे राजनीतिक तथ्यों एवं वास्तविकताओं की खोज की, जो इसके पूर्व अँधेरे के गर्त में थी। इसने राजनीतिक विश्लेषण के क्षेत्र को व्यापक आधार दिया है। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि संरचनात्मक - प्रकार्यात्मक उपागम एक सैद्धान्तिक विचारबंध प्रस्तुत करता है, जो विश्लेषणात्मक दृष्टि से संगत तथा आधुनिक रूप में लाभप्रद प्रयोग की क्षमताएँ रखता है।

Dr. Akhlakh Ahmed
(Assistant Prof.)
Dept. of. Political Sc.
DK College, Dumraon.

...प्रकार के निर्गत मूल्यों (Output Function)
तथा इससे जुड़ी हुई संरचनाओं का पता लगाया। उसके अनुसार